तेरी ममता और करुणा की कोई नही सीमा

तेरी ममता और करुणा की कोई नही सीमा
जैसे ईश्वर ने बनाई खुद की ही प्रतिमा
तेरी महिमा लिखने के लिये कम है आसमां
मां सविंदर मां (ध्रु)

कंधे से कंधा मिलाकर सतगुरू के संग चलती रही
हमको गुरुमत ऐसे सिखाई गुरुwमत मे खुद ढलती रही
सतगुरु ने हमसे जो चाहा बिना कहे करती रही
हमको दी आंचल की छाया सारी धुप खुद सहती रही
मां सविंदर मां (१)

बिना रुके और बिना थके दिनरात सफर तुम करती रही
जो कुछ भी था पास उसीसे झोलीया सबकी भरती रही
सुखो के वरदान दिये और दुःख तुम सबके हरती रही
त्रिलोकी की मालिक होकर खुद को समर्पित करती रही
मां सविंदर मां (२)

राजमां की लाडली तुम गूरु परिवार की सेवा मे मगन
एक आदर्श बहु बेटी और मां का निभाया दिव्य जीवन
सतगुरु की जीवन संगिनी साथ दिया हरपल हर क्षण
हर कर्तव्य निभाया बखुबी एक समर्पित गुरुसिख बन
मां सविंदर मां (३)

हर र्निबल का बल तुम बनकर हमको तुने सहारा दिया

हाथ पकडकर हम बच्चो को मंझिल का इशारा दिया

घिरे थे जब हम तुफानो मे तुमने हमको किनारा दिया

राजू गोपी दिलवर मिशन को मां ने नया उजियारा दिया

मां सविंदर मां (४)